राजस्थान का इतिहास-

हस्तलिखित नोट्स by Aadarsh Sir

REET, पटवार,वनपाल, वनरक्षक,BSTC,PTET,ग्रामसेव

ऐसे ही आपको हर विषय के नोट्स उपलब्ध कराते रहेंगे, आप RAJASTHAN CLASSES CHANNEL को SUBSCRIBE जरुर कर लीजिए डेली क्लास ज्वाइन करें पूर्णत निशुल्क

नोट-अपने प्रयास से सभी तथ्य सही किए है – फिर भी किसी प्रकार की त्रुटी पाई जाती है

तो राजस्थान क्लासेज जिम्मेदार नही होगा, आप सम्पर्क कर सकते है! Whatsapp- 8107670333

RAJASTHAN CLASSES

पीडीएफ के किसी भी भाग पर क्लिक करने पर आपको youtube क्लास मिल जाएगी

सभी पीडीएफ निशुल्क उपलब्ध करवाई जाएगी
पीडीएफ को ज्यादा से ज्यादा शेयर जरुर करें
आपके हित में सदैव तत्पर : आदर्श कुमावत

राजस्थान क्लासेज के साथ जुड़कर अपनी तैयारी को पंख दीजिये और विषयानुसार बनी प्लेलिस्ट से पढ़कर अपनी तैयारी बेहतर करें

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

1857 की क्रान्ति

प्रमुख कारण, सन्धियाँ, प्रभाव, सैनिक विद्रोह

⇒ सहायक सन्धि = गवर्नर जनरल लॉर्ड वैलेजली (1798-1805) द्वारा प्रारम्भ की गई सन्धि नीति देशी राज्यों की आंतरिक सुरक्षा व विदेश नीति का उत्तरदायित्व अंग्रेजो पर था, जिसका खर्च व्यय राज्य को उठाना था

→ राजस्थान में सर्वप्रथम भरतपुर ने 29 सितम्बर 1803 में लॉर्ड वैलेजली एवं रणजीत सिंह के बीच
→ आक्रमण सन्धि सर्वप्रथम अलवर ने 14 नवम्बर 1803 में की राजा बख्तावरसिंह उस समय शासक थे।

→ अधीनस्थ पार्थक्य की सन्धि ⇒
→ सर्वप्रथम करौली ने 15 नवम्बर 1817 को संक्षिप्त सन्धि
→ विस्तृत एवं व्यापक कोटा प्रशासक झाला जालिमसिंह ने 26 दिसम्बर 1817 को की।
→ 1818 के अन्त में सभी रियासतों ने ईस्ट इण्डिया क. से सन्धि कर ली थी (मात्र सिरोही रियासत को छोड़कर)
→ ये संधियां कराने में चार्ल्स मेटकाफ व कर्नल टॉड की भूमिका

→ विलय की नीति = सन 1848 को भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी द्वारा प्रारम्भ की गई।
→ किसी राजा के निःसंतान मरे जाने के बाद उसकी रियासत ब्रिटिश साम्राज्य में मिला दी जाती थी
→ इस तहत सर्वप्रथम 1848 में सतारा और फिर 1856 में अवध को अंग्रेजी राज्य में मिलाया

⇒ 1857 के समय राजपूताना में नियुक्त पॉलीटिकल एजेंट
→ कोटा - मेजर बर्टन, जोधपुर - मोक मेसन
→ भरतपुर - सॉरीसन, जयपुर - विलयम ईडन
→ उदयपुर - कैप्टन शावर्स, सिरोही - जेडी. हॉल

By Aadarsh Kumawat

⇒ इस समय भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग।
⇒ राजस्थान के एजीजी जॉर्ज पेट्रिक्स लॉरेंस थे।
⇒ अंतिम मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर के नेतृत्व में यह जंग लड़ने का फैसला लिया।
⇒ 1857 क्रान्ति में राजस्थान में कुल 6 छावनियां थी
1. ब्यावर = अजमेर 2. नसीराबाद अजमेर
3. नीमच - मध्यप्रदेश 4. एरिनपुरा - पाली
5. देवली - टोंक 6. खेरवाड़ा - उदयपुर

→ जिनमें खेरवाड़ा व ब्यावर की छावनियों ने भाग नहीं लिया -
→ अजमेर मेरवाड़ा का प्रशासन कमिश्नर कर्नल डिक्सन द्वारा संचालित था।
→ एजीजी पेट्रिक लॉरेंस का मुख्यालय माउंट आबू था।

⇒ 1857 की तत्कालिक कारण -
एनफील्ड राइफलों में चरबी लगे कारतूसों के प्रयोग ने सैनिकों की भावनाओं को आहत किया।
→ 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का प्रारम्भ 10 मई 1857 को मेरठ छावनी में सेना के विद्रोह से -

⇒ अजमेर राजपुताना की प्रशासनिक राजधानी था। अंग्रेजों का खजाना और शस्त्रागार अजमेर में

⇒ मि. लॉकेट को राजस्थान का प्रथम एजीजी नियुक्त किया गया था। जिसका कार्यालय - अजमेर था।
⇒ 1857 की क्रान्ति के प्रतीक चिह्न के रूप में कमल व रोटी / चपाती को चुना गया।
⇒ क्रान्ति की की शुरुआत नसीराबाद (अजमेर) से तथा क्रान्ति का अन्त सीकर में हुआ।

⇒ एनफील्ड राइफल से पहले भारत में ब्राउनबेस राइफल चलती थी

By Aadarsh Kumawat

1857 का प्रारम्भ

⇒ नसीराबाद ⇒ (28 मई 1857)
राजस्थान में 1857 के विद्रोह का प्रारम्भ 28 मई
* 1857 को नसीराबाद (अजमेर) से हुआ।
* नसीराबाद में 15वीं बंगाल नेटिव इन्फेन्ट्री ने अपने ऊपर अविश्वास के कारण (अजमेर से हटाया गया) विद्रोह किया
* विद्रोह कर तोपखाने को अपनी ओर मिलाया और अधिकार
* 15 वीं नेटिव की सहायता 30वीं नेटिव बंगाल इन्फेन्ट्री ने की।

* न्यूबरी, के. वेनी और के. स्पोर्टिसवुड की हत्या की गई
* सैनिको ने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया,
* 18 जून को दिल्ली में अंग्रेजी सेना पर अधिकार किया।
* अंग्रेज अधिकारी वाल्टर व हीथकोट ने मेवाड़ की सैनिको की सहायता से इनका पीछा किया परन्तु सफलता नही।
* Imp- नसीराबाद छावनी को लूटने वाला राजपूत सरदार डूंगरसिंह था।

⇒ ब्यावर छावनी = यहाँ पर मेर जाति की टुकड़ी थी जिन्होंने 1857 की क्रान्ति मे भाग नही लिया।

⇒ नीमच छावनी * 3 जून 1857 को नीमच में सैनिकों ने हीरासिंह के नेतृत्व में विद्रोह किया।
* 5 जून को 1857 को देवली व आगरा होते हुए दिल्ली के लिए कूच किया।
* कैप्टन शावर्स के नेतृत्व में मेवाड़ की सेना एवं कैप्टन हार्डकेसल व लेफ्टि. वाल्टर के नेतृत्व में जोधपुर की सेनाओं ने इनका (क्रान्तिकारियो) का पीछा किया लेकिन क्रान्तिकारियों को पकड़ने में असमर्थ रहे।
⇒ डूंगला नामक स्थान पर क्रान्तिकारियों ने अंग्रेज अफसर व परिवारजनों को बंधक बना लिया. मेजर शावर्स के नेतृत्व में मेवाड़ की सहायता से छुड़ाए और उदयपुर पहुंचाया।

→ उदयपुर में महाराणा स्वरूप सिंह ने उन्हें पिछोला झील के जगमन्दिर में शरण दी।
→ मेवाड़ का पॉलिटिकल एजेन्ट: मेजर शावर्स
→ नीमच छावनी विद्रोह के क्रान्तिकारी मुहम्मद अली बेग ने शपथ लेकर सिद्ध कर दिया था कि वह अंग्रेजो का साथ नही देंगे।
→ शावर्स व कोटा एजेंट बर्टन ने 6 जून 1857 को वापिस नीमच पर अधिकार किया।

→ भरतपुर = (31 मई 1857)
भरतपुर की सेना ने 31 मई 1857 को विद्रोह कर दिया परिणाम स्वरूप पॉलिटिकल एजेंट मॉरीसन को भरतपुर छोड़कर भागना पड़ा।
* यहा का शासक जसवंत सिंह नाबालिग था।
* गुर्जरो व मेवो द्वारा 31 मई 1857 को विद्रोह।

→ एरिनपुरा 21 अगस्त 1857
→ पहले यह छावनी मारवाड़ रियासत मे थी
→ 21 अगस्त को छावनी के पूर्बिया सैनिको ने विद्रोह।
→
आउवा का विद्रोह → मारवाड़ में विद्रोह का सर्वप्रमुख केन्द्र आउवा स्थान था।
→ आउवा के ठाकुर खुशालसिंह के नेतृत्व मे विद्रोह
→ बिथौड़ा (पाली) में क्रान्तिकारियों ने जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह व कैप्टन हीथकोट को 8 सितम्बर 1857 को हराया।
→ 9 सितम्बर 1857 को जोधपुर सेनाप्रमुख अनाड़सिंह को मारा।

* एजीजी पैट्रिक लॉरेंस अजमेर से सेना लेकर आए लेकिन चेलावास स्थान पर 18 सितम्बर 1857 को क्रान्तिकारियो से हारे।
* इसे कालो गोरो का युद्ध,

⇒ इस युद्ध में जोधपुर का पॉलिटिकल एजेन्ट मोक मोसन मारा गया। एवं जो लोरेंस के साथ था।
⇒ क्रान्तिकारियो ने मोक मैसन का सिर आउवा के किले के दरवाजे पर लटका दिया।

⇒ जोधपुर लीजन के क्रान्तिकारी 10 अक्टूबर 1857 को आसोपा के ठाकुर शिवनाथसिंह के नेतृत्व में दिल्ली की ओर - रेवाड़ी पर अधिकार किया, परन्तु नारनौल में वे ब्रिगेडियर गेराई की सेना से 16 नवम्बर को परास्त हुए।
और शिवनाथ सिंह ने वापिस आलनिया आकर आत्मसमर्पण कर दिया।

⇒ गवर्नर जनरल लॉर्ड केनिंग के कर्नल होम्स की अगुवाई में एक विशाल सेना आउवा भेजी, घमासान - 20 जनवरी 1858
⇒ क्रान्तिकारी टिक न सके, विजय की आशा न पाकर ठाकुर खुशालसिंह 23 जनवरी 1858 की रात्रि में किले का भार अपने छोटे भाई लम्बिया कलां के पृथ्वीसिंह को सौंप कर भाग निकले, पीछा करने गई अंग्रेजी सेना को सीरीयारी घराने के प्रमुख ने 24 घंटे तक रोके रखा।

→ 24 जनवरी 1858 को दुर्ग पर ब्रिटिश सेना का अधिकार
→ ठाकुर खुशालसिंह ने कोठारिया के रावत जोधसिंह के यहां शरण ली।
→ अन्ततः 8 अगस्त 1860 के दिन नीमच में समर्पण
→ 10 नवम्बर 1860 को उन्हे रिहा गया
→ 25 जुलाई 1864 को ठाकुर खुशालसिंह का उदयपुर में स्वर्गवास

→ 24 जनवरी को भयंकर कत्लेआम हुआ एवं किले में स्थित सुगाली माता की मूर्ति को अजमेर ले जाया गया
→ 1857 के क्रान्ति की देवी सुगाली माता थी।
→ 10 सिर और चौपन हाथ वाली प्रतिमा, वर्तमान में पाली में
→ आउवा ठाकुर परिवार की कुलदेवी, मूर्ति ऊंचाई - 3 फुट 8 इंच
चौड़ाई = 2 फुट 5 इंच।

⟹ कोटा में विद्रोह ⟹ महत्वपूर्ण योगदान
* कोटा के पॉलिटीकल एजेन्ट मि॰ बर्टन थे।
* अंग्रेजी सेना ने बिना किसी विरोध के नीमच में 3 जून 1857 को अधिकार कर लिया।
* कोटा में जयदयाल व मेहराबखान के नेतृत्व में 15 अक्टूम्बर, 1857 को क्रान्ति का बिगुल।

* पॉलिटिकल एजेंट मि॰ बर्टन, उसके दो पुत्रों व एक डॉक्टर सैंडलर काटम की हत्या कर दी गई
* क्रान्तिकारियों ने बर्टन के सिर को शहर में खुला प्रदर्शन।

* कोटा महाराव रामसिंह को उनके महल में नजरबन्द किया
* सम्पूर्ण कोटा को क्रान्तिकारियों ने अपने अधिकार में।
* जनवरी 1858 में करौली की सेना ने आकर कोटा रामसिंह को नजरबन्दी से मुक्त करवाया (करौली-मदनपाल)

* मार्च 1858 में मेजर जनरल रॉबर्ट्स के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने कोटा की क्रान्तिकारी पर आक्रमण किया।
* 30 मार्च को पुनः अंग्रेजी सेना का अधिकार
* जयदयाल और मेहराब खां को फांसी दी गई।
* 12 दिसम्बर 1859 को मेहराबखां, 15 मई 1860 को जयदयाल को

⟹ टोंक रियासत में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम ⟹
→ टोंक रियासत की स्थापना 1817 में नवाब अमीर खां व अंग्रेज शासकों के मध्य एक समझौते के जरिए।
→ द्वितीय नवाब - वजीब खां काल में भारत का प्रथम स्वतंत्र संग्राम
→ टोंक क्रान्तिकारियों ने तात्या टोपे के टोंक आने पर उनके साथ हुए
→ बनास नदी के किनारे अमीरगढ़ किले के निकट विद्रोह
→ अंग्रेज पक्षधर नवाब फैजुल्ला खां को पकड़कर तोपखाने पर अधिकार
→ सम्पूर्ण टोंक का शासन 6 माह तक क्रान्तिकारियों के पास रहा
→ अन्त में जयपुर के रेजीडेन्ट ई डन ने टोंक को मुक्त कराया
→ टोंक की क्रान्ति में मीर आलम खां व परिवार की अग्रणी भूमिका।

→ धौलपुर में क्रान्ति ⇒ राव रामचंद्र व हीरालाल ने ग्वालियर व इन्दौर के क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर विद्रोह।
→ 2 माह विद्रोह रहने पर पटियाला की सेना ने आकर विद्रोह को समाप्त किया।

⇒ 1857 में राजस्थान में तात्यां टोपे की गतिविधियाँ।
* पेशवा बाजीराव के उत्तराधिकारी, नाना साहब का स्वामीभक्त
* 1857 की क्रान्ति में वह ग्वालियर का विद्रोही नेता था।
* तात्यां टोपे 23 जून, 1857 ई. को अलीपुर में अंग्रेजो से हारे।
* सहयोग की आकांक्षा से 8 अगस्त 1857 को भीलवाड़ा आए
* 9 अगस्त 1857 को कोठारी नदी के तट पर कुआड़ा नामक स्थान पर रॉबर्ट्स की सेना से युद्ध, हारना पड़ा।
* तत्पश्चात सेना सहित झालावाड़ पहुंचे, झालावाड़ की सेना साथ हो गई, शासक पृथ्वीसिंह को अपदस्थ कर अधिकार किया
* फिर तात्या टोपे उदयपुर गए, वहां से पुनः ग्वालियर लौटे।

* दिसम्बर 1857 में तात्यां टोपे पुनः मेवाड़ आए
* 11 दिसम्बर 1857 को उनकी सेना ने बासवाड़ा पर अधिकार
* बाद में सलूम्बर व भीडर होते हुए टोंक क्रान्तिकारियों को साथ किया
* अमीरगढ़ के निकट टोंक नवाब से युद्ध कर टोंक पर अधिकार
* जयपुर मेजर ईडन सेना लेकर टोंक आ गए।
* टोपे नाथद्वारा की ओर चले गए -
* अन्ततः तात्यां टोपे को नरवर के जागीरदार मानसिंह नरूका की सहायता से नरवर के जंगलो में पकड़ लिया गया।
* 18 अप्रैल, 1859 को उन्हें सिप्री नामक स्थान पर फांसी दी गई

⇒ प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का अन्त एवं क्रान्ति के असफल के कारण
* सितम्बर 1857 को मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर को पकड़ लिया
* दिल्ली में लाल किले पर अंग्रेजो का आधिपत्य।
* असफलता के कारण - ① पर्याप्त नियोजन व सूझबूझ का अभाव ② अधिकांश नरेशो द्वारा अंग्रेजो का साथ देना ③ क्रान्तिकारियों के पास धन रसद व हथियारों की कमी, क्रान्तिकारियों में समन्वय का अभाव।

* क्रान्ति का तात्कालिक कारण =
ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया ने 2 अगस्त 1858 को भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन समाप्त कर शासन सीधे ब्रिटिश ताज के अधीन कर दिया।
* गवर्नर जनरल का पदनाम वायसराय हो गया
* भारत का प्रथम वायसराय व गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग।

⇒ अति महत्वपूर्ण तथ्य ⇒
* बीकानेर का शासक सरदारसिंह एकमात्र ऐसा शासक जो स्वयं व्यक्तिगत रूप से अपनी सेना लेकर अंग्रेजो की सहायता हेतु पंजाब तक गए।

* अलवर के महाराजा विनयसिंह ने आगरा के किले में घिरे अंग्रेजो की सहायता के लिए अपनी सेना भेजी।

* अमरचन्द बांठिया - (बीकानेर) राजस्थान का 1857 क्रान्ति का प्रथम शहीद - इन्हे 22 जून 1858 को ग्वालियर में फांसी

* हेमू कालानी (सरदार शहर-चुरू) 1857 क्रान्ति का राजस्थान का सबसे कम उम्र का शहीद माना जाता है। टोंक में इन्हें फांसी दी गई।

* अंग्रेजो के सहयोग में, अलवर, जयपुर, करौली, बीकानेर मुख्यतः
* क्रान्तिकारियो ने राजपुताना की छः रियासतो पर अधिकार कर लिया था
(A) धौलपुर (B) भरतपुर (C) टोंक (D) कोटा
(E) झालावाड़ (F) बांसवाड़

* जयपुर के रामसिंह द्वितीय को सितार ए हिन्द की उपाधी व कोटपुतली परगना अंग्रेजी सरकार द्वारा दिया गया।

राजस्थान में किसान आन्दोलन

⇒ बिजौलिया किसान आन्दोलन = (1897-1941)
→ बिजौलिया आन्दोलन तीन चरणों में हुआ।
→ बिजौलिया वर्तमान में भीलवाड़ा में है।
→ प्रथम चरण - (1897-1915)
→ बिजौलिया के नए जागीरदार किशनसिंह बने
→ राव कृष्णसिंह (किशनसिंह) ने 1903 में किसानों पर चंवरी कर नाम से नई लागत लगा दी
→ लाग के अनुसार प्रत्येक किसान को अपनी लड़की के विवाह पर पाँच-चंवरी कर के रूप में ठिकाने को देते थे.

→ 1906 में पृथ्वीसिंह बिजौलिया का जागीरदार बना। उसने तलवार बन्दी नाम से नई लागत लगा दी 1914 में फिर कुछ रियायतें दी गई।

⇒ इससे पहले साधु सीताराम दास के प्रोत्साहन व नेतृत्व से 1897 में गिरधपुरा (भीलवाड़ा) नामक गांव में गंगाराम धाकड़ की पिता की मृत्यु भोज पर धाकड़ जाति के किसान एकत्र हुए.
⇒ नानजी पटेल व ढाकरी पटेल को ठिकाने की जुल्मो की शिकायतें देकर महाराणा फतेहसिंह के पास भेजे।

⇒ 1914 में चित्तौड़ में विद्या प्रचारिणी सभा का अधिवेशन हुआ था, जिसमें साधु सीताराम दास ने विजयसिंह पथिक को बिजौलिया आमंत्रित किया।
→ विजयसिंह पथिक का वास्तविक नाम भूप सिंह।
→ यह बुलन्दशहर U.P. के गुढ़ावली के रहने वाले थे।
→ राजस्थान में इन्हें क्रान्तिकारी के सन्देह में बन्दी बनाकर टॉडगढ़ जेल में डाल दिया, कुछ समय बाद जेल से भाग निकले
→ अपना नाम बदलकर विजयसिंह पथिक किया और राजस्थान का रहन-सहन धारण किया।

By Abhay Kumawat

RAJASTHAN CLASSES

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

By Aadarsh kumawat

Pdf को अपने मित्रो के साथ शेयर जरुर करें

⇒ दूसरा चरण ⇒ (1916-1922)
1916 में किसानों ने साधु सीताराम की अध्यक्षता में 'किसान पंच बोर्ड' की स्थापना की
→ 1916 में विजयसिंह पथिक ने बिजौलिया किसान आन्दोलन का नेतृत्व सम्भाला।

* विजयसिंह पथिक ने "उपरमाल पंच बोर्ड" की स्थापना की और श्रीमन्ना पटेल को सरपंच बनाया।
* माणिक्यलाल वर्मा और रामनारायण चौधरी भी इस आन्दोलन में सम्मिलित हो गए।
* अप्रैल 1919 में मेवाड़ सरकार ने न्यायमूर्ति बिन्दुलाल भट्टाचार्य की अध्यक्षता में एक जांच आयोग गठित।
* जांच आयोग ने उचित माना लेकिन मेवाड़ सरकार ने ध्यान नहीं।
* दिसम्बर 1919 में राष्ट्रीय कांग्रेस के अमृतसर अधिवेशन में विजयसिंह पथिक ने प्रस्ताव रखा।

* एजीजी रॉबर्ट हॉलेंड व किसान पंचायत के मध्य उच्च स्तरीय समझौता हुआ।
* 11 जून 1922 समझौता, किसानों की महत्वपूर्ण विजय।

* 84 में से 35 कर हटा दिए गए, लेकिन यह समझौता स्थायी नहीं रहा, बिजौलिया जागीरदार ने 1922 के समझौते की भावना को मानने से इनकार कर दिया।
* 10 सितम्बर 1923 को विजयसिंह पथिक को गिरफ्तार कर पांच वर्ष के लिए जेल में डाल दिया।
अब ये कमान माणिक्यलाल वर्मा के पास आ गई।

तीसरा चरण - (1923-1941)
→ 1926 ई. के बन्दोबस्त में लगान की दरें बहुत ऊंची तय की गई थी।
और पंचायत निर्णयानुसार किसानों ने अपनी जमीनें छोड़ दी।

⇒ 1927 में पथिक जी किसी कारण वश इस आन्दोलन से पृथक होने के बाद इस आन्दोलन का नेतृत्व माणिक्यलाल वर्मा, जमनालाल बजाज व हरिभाऊ उपाध्याय ने किया।

→ 1941 में मेवाड़ के प्रधानमंत्री टी. राघवाचार्य व ब्रिटिश रेजीडेंट बिल्किंस व मेवाड़ के राजस्व मंत्री मोहन सिंह की मध्यस्थता से यह आन्दोलन समाप्त हुआ

⇒ महत्वपूर्ण = लोकमान्य तिलक ने मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह को बिजौलिया आन्दोलनकारियों की मांगो को पूरा करने हेतु पत्र लिखा था।

⇒ किसानो की नीलाम हुई जमीनें वापिस दी गई।
⇒ बिजौलिया किसान आन्दोलन देश का प्रथम किसान आन्दोलन
⇒ राजस्थान का सर्वाधिक लम्बे समय तक चलने वाला आन्दोलन

⇒ बेंगू किसान आन्दोलन ←

⇒ बिजौलिया का प्रभाव पड़ोसी ठिकाने बेंगू पर भी पड़ा।
→ बेंगू ठिकाना मेवाड़ के अन्तर्गत था, वर्तमान में - चित्तौड़गढ़
→ आन्दोलन के समय जागीरदार अनूप सिंह था।
→ 1921 में भेरूकुण्ड नामक स्थान पर किसान एकत्र हुए।
→ लाग-बाग, बेगार, ऊंचे लगान नहीं देने का निर्णय किया
→ विजयसिंह पथिक ने रामनारायण चौधरी को नेतृत्व प्रदान किया
→ 1922 में मंडावरी में किसान सम्मेलन पर गोलियां चलाई।
→ जिससे अनूपसिंह ने किसानो से समझौता कर लिया।
→ लेकिन बोल्शेविक समझौता बताकर मेवाड़ सरकार ने अनूपसिंह को निष्कासित कर मुंशी अमृतलाल को मुंशरिम बनाया
→ 13 जुलाई 1923 में गोविन्दपुर में किसान सम्मेलन पर कमिश्नर ट्रेंच ने गोलियां चलवाई जिसमें रूपाजी व कृपाजी धाकड़ किसान शहीद हुए।
→ विजयसिंह पथिक की गिरफ्तारी (10 सितम्बर 1923) के बाद आन्दोलन रुका
→ अन्त में 1925 में किसानो व ठिकानो के मध्य समझौता हुआ।

बरड़ किसान आन्दोलन (1921-1943)

⇒ 1922 में प० नयनूराम शर्मा के नेतृत्व में बून्दी के किसानों ने बेगार, लाग बाग एवं ऊंची लगान दरो के विरुद्ध आन्दोलन किया।

→ 2 अप्रेल 1923 को किसानों ने डाबी नामक स्थान पर सभा का आयोजन किया। सभा को रोकने हेतु हाकिम इकराम हुसैन ने गोली चलाने का आदेश दे दिया जिससे नानक जी भील की मृत्यु।

→ 1923 में पंडित नयनूराम शर्मा को गिरफ्तार कर लिया,

→ 1927 ई. के बाद राजस्थान सेवा संघ के साथ ही बरड़ क्षेत्र का किसान आन्दोलन भी समाप्त।

→ अलवर किसान आन्दोलन ← (1924-1925)

→ अलवर शासक जयदेव सिंह द्वारा सूअरों को मारने पर प्रतिबंध लगाने व खालसा क्षेत्र में लगान वृद्धि करने के कारण किसानो ने आन्दोलन।

→ जनवरी 1925 में अलवर के राजपूत किसानो ने भारतीय क्षत्रिय महासभा में पुकार पत्रिका में अपनी समस्याओं का ब्यौरा दिया गया

→ अन्तत: सुअरो को मारने की इजाजत दी गई।

⇒* नीमूचणा हत्याकाण्ड (14 मई 1925)

→ नीमूचणा गांव (अलवर) में बड़ी संख्या में उपस्थित किसानों की सभा पर छाजूसिंह ने गोलियो एवं घर जलाने के आदेश दिए

→ परिणाम स्वरूप 144 घर जलाए गए, 50 व्यक्ति एवं 160 पशु मारे गए तथा 1600 व्यक्ति घायल।

→ राजस्थान सेवा संघ ने 3 मई 1925 को तरुण राजस्थान में प्रकाशित।

→ महात्मा गांधी ने इसे यंग इण्डिया में डोयरशाही बताया, जलियावाला कांड से भी विभत्स बताया।

By Abhishek Kumawat

* मारवाड़ किसान आन्दोलन *

⇒ मई 1929 में मारवाड़ हितकारिणी सभा ने बेगार बाग व लगान दर के विरोध में आन्दोलन

⇒ लघु पुस्तिकाएँ → पोपाबाई का राज, मारवाड़ की अवस्था प्रकाशित की, जयनारायण व्यास की तरुण राजस्थान भी मुख्यतः

⇒ सितम्बर 1929 को प्रमुख नेताओं, जयनारायण व्यास आनन्दराज सुराणा एवं भंवरलाल सर्राफ को गिरफ्तार

⇒ गान्धी इरविन समझौते (04 मार्च 1931) के बाद रिहा -

⇒ डाबड़ काण्ड ⇒ 13 मार्च 1947 को डाबरा (डीडवाना) में मारवाड़ लोक परिषद द्वारा एक किसान सभा का आयोजन किया गया।

⇒ सभा पर जागीरदार के लोगों ने हमला किया, 12 लोग मारे गए

⇒ जून 1948 को जनतारायण व्यास ने किसानों को राहत दिलाई

⇒ शेखावाटी क्षेत्र के किसान आन्दोलन (1925-1927)

(1) → कटराथल सभा = (25 अप्रैल 1934) को हरलालसिंह की पत्नि किशोरी देवी के नेतृत्व में हजारों जाट महिलाओं ने किसान आन्दोलन में भाग लिया।

→ मुख्य कारण = सीहोठ के ठाकुर द्वारा बोसाणा एवं बिसाऊ गांव की महिलाओं के प्रति दुर्व्यवहार के विरुद्ध में।

(2) ⇒ हनुमानपुरा की घटना - (16 मई 1934)

→ हिरवा के ठाकुर कल्याणसिंह के आदमियों ने हनुमानपुरा गांव में आग लगा दी थी।

(3) ⇒ जयसिंहपुरा काण्ड - (3 जून 1934)

डूंडलोद के ठाकुर हरनाथ सिंह के भाई ईश्वरीसिंह ने जयपुरा सिंह गांव में 3 जून 1934 को किसानों पर गोलियां चलाई 15 स्त्री पुरुषों की मृत्यु हो गई, 1936 तक आन्दोलन शिथिल।।

B.Aadarsh Kumawat

⇒ दूधवा खारा किसान आन्दोलन । 1944-1948
⇒ चुरू जिले में स्थित दूधवा खारा
→ दूधवाखारा के ठाकुर सूरजमल सिंह ने 1944 में किसानो से अतिरिक्त कर वसूलने का प्रयास
→ बढ़ते अत्याचारो के विरुद्ध चौधरी हनुमानसिंह के नेतृत्व में 2 जून 1945 को माउंट आबू में महाराजा सार्दुलसिंह से अपील की।
→ मघाराम वैद्य ने दूधवाखारा पहुंचकर समर्थन दिया
→ हनुमान सिंह चौधरी की गिरफ्तारी पर दूधवाखारा के किसान सडको पर आ गए।
→ हनुमानसिंह को 10 अगस्त 1945 को रिहा कर दिया।

⇒ राजस्थान में जनजातीय आन्दोलन ⇐

⇒ गोविन्द गिरि का भगत आन्दोलन ⇐
⇒ गोविन्द गिरि का जन्म 1858 में डूंगरपुर के बेडसा (बांसिया) नामक ग्राम में बनजारे परिवार में।
→ कोटा-बूंदी अखाड़े के साधु राजगिरि का शिष्य बना
→ गोविन्द गिरि ने सिरोही में 1883 में सम्पसभा की स्थापना
→ सम्पसभा का प्रथम अधिवेशन 1903 में मानगढ़ में हुआ।

→ 1908 तक डूंगरपुर का बेड़चा गांव छोड़ने हेतु बाध्य किया गया
→ 1908 से 1911 तक बम्बई प्रान्त के राज्यों ईडर में कार्य किया।
→ 1911 में इन्होने पुनः डूंगरपुर आकर भगतपंथ चलाया।
→ अब तक गोविन्द गिरि का प्रभाव ईडर, सूंथ, बांसवाड़ा डूंगरपुर, सिरोही, इसके अलावा पंचमहल व खेड़ा तक (गुजरात)

→ अप्रैल 1913 में गोविन्द गिरि को गिरफ्तार किया।
→ डूंगरपुर राज्य से बाहर रहने की शर्त पर रिहा।
→ मानगढ़ पहाड़ी (बांसवाड़ा) को कार्यस्थली बनाया।
→ मानगढ़ पहाड़ी पर हजारो की संख्या में भील एकत्र किए।

⇒ अंग्रेज अधिकारी चिन्तित होकर भीलो का दमन चाहा।
⇒ 6 से 10 नवम्बर 1913 में मेवाड़ भील कोर की टुकडियों ने मानगढ़ की पहाड़ी को घेर लिया।
⇒ 17 नवम्बर, 1913 को अंग्रेजी फौजो ने मानगढ़ पहाड़ी पर आक्रमण कर दिया, भयंकर जनसंहार हुआ। लगभग 1500 भील मारे गए, हजारो लोग घायल हुए।
⇒ मानगढ़ राजस्थान का जलियावालां बाग कहलाता।

⇒ गोविन्द गिरि को गिरफ्तार कर अहमदाबाद जेल भेजा गया
→ मृत्यु दण्ड की सजा सुनाई लेकिन सात वर्ष बाद रिहाई।
→ इनका अंतिम समय गुजरात के कम्बोई नामक स्थान पर हुआ

(मोतीलाल तेजावत का एकी आन्दोलन)
⇒ मोतीलाल तेजावत कोलियारी (झाड़ोल) के निवासी इनका जन्म 1886 में ओसवाल (बनिया) परिवार में हुआ।
→ मोतीलाल तेजावत ने आदिवासियों को सामंती शोषण से राहत दिलाने हेतु 1921 में वैशाख पूर्णिमा को चित्तौड़ जिले के मातृकुण्डिया से एकी आन्दोलन शुरू किया।
⇒ पिछोला झील पर इन्होने आठ हजार किसानो को एकत्र किया।
⇒ तेजावत ने महाराणा के समक्ष 21 सूत्री मांग पत्र प्रस्तुत किया जिसे मेवाड़ पुकार के नाम से जाना गया।
⇒
⇒ तेजावत की सलाह पर भोमट के समस्त भीलो ने कर देना बन्द।
⇒

→ 7 मार्च 1922 को मेजर सटन की मेवाड़ भील कोर ने भीलो पर गोलियां चलाई, ये सम्मेलन विजयनगर राज्य के नीमडा गांव में आयोजित हुआ, जिसमें 1200 लोग मारे गए। ये राजस्थान का दूसरा जलियावालां बाग हत्याकांड था।
→ मोतीलाल तेजावत ने 1936 में उदयपुर में वनवासी सेवा संघ की स्थापना

RAJASTHAN CLASSES

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

By Aadarsh kumawat

Pdf को अपने मित्रो के साथ शेयर जरुर करें

→ 1963 में मोतीलाल तेजावत की मृत्यु।

→

मीणा आन्दोलन

→ जयपुर में जयरामपेशा कानून बनाया गया जिसमें मीणा को अपराधी जाति घोषित की गई।

→ 1933 में जयपुर में मीणा क्षत्रिय महासभा गठित। जिसने जयपुर में जयरामपेशा कानून समाप्त की मांग की

→ 1945 में जैन मुनि मगनसागर जी ने मीनपुराण लिखकर मीणा जाति को उसके प्राचीन गौरव से अवगत कराया।

→ जयरामपेशा कानून में 25 से ऊपर उम्र वाले व्यक्ति को थाने में हाजिरी देना।

→ मुनि मगनसागर की अध्यक्षता में 7 अप्रैल 1945 को नीमका थाना (सीकर) में मीणा सम्मेलन हुआ।

→ जयपुर राज्य मीणा सुधार समिति की स्थापना जिसकी अध्यक्षता बंशीधर शर्मा को दी गई।

→ 1946 में बच्चों व स्त्रियों को थाने में हाजिरी मुक्त किया।

→ 28 अक्टूबर 1946 को बागावास महासम्मेलन में एक विशाल सम्मेलन आयोजित कर चौकीदार मीणों ने स्वेच्छा चौकीदारी ~~इस्ती~~ काम से इस्तीफा।

→ 1952 में जयरामपेशा कानून को पूर्णतः बंद किया गया।

→ बीकानेर षडयंत्र = 1931 में लंदन में हुए गोलमेज सम्मेलन में बीकानेर के श्री चन्दनमल बहड, स्वामी गोपालदास सत्यनारायण व साथियों ने बीकानेर की वास्तविकता का चित्रण करते हुए बीकानेर एक दिग्दर्शन, पुस्तिका से अन्तराष्ट्रीय स्तर पर खुलासा किया, जिससे गंगासिंह ने इन पर राजद्रोह का झूठा मुकदमा चलाया, अमानुषिक व्यवहार व कड़ी सजाएं

→ मारवाड़ का शुद्धि आन्दोलन = श्री चान्दमल सुराणा व साथियों द्वारा 1920-21 में जोधपुर सरकार के 100 तोले के सेर 80 तोले में परिवर्तित करने पर आन्दोलन।

राज्य के प्रमुख प्रजामंडल आन्दोलन

⇒ हरिपुरा अधिवेशन= 1938 में सुभाष चन्द्र बोस की अध्यक्षता में हरिपुरा अधिवेशन में रियासतों की जनता को अपने राज्यों में उत्तरदायी शासन, व संगठन बनाकर आन्दोलन करने व जनजागृति फैलाने का आह्वान

→ अतः 1938 के बाद राजस्थान की लगभग सभी रियासतों मे प्रजामण्डलो की स्थापना हुई।

- मेवाड़ में प्रजामंडल आन्दोलन:

⇒ उदयपुर में प्रजामंडल की स्थापना का श्रेय श्री माणिक्यलाल वर्मा को जाता है।

⇒ उदयपुर में 24 अप्रैल 1938 को श्री बलवन्तसिंह मेहता की अध्यक्षता में मेवाड़ प्रजामंडल की स्थापना की। अन्य सहयोगी- रमेशचन्द्र व्यास, भवानीशंकर वैद्य हीरालाल कोठारी एवं भूरेलाल बया।

⇒ उदयपुर सरकार द्वारा मेवाड़ प्रजामंडल को 24 सितम्बर 1938 को गैर-कानूनी घोषित कर दिया था।

→ विजयादशमी के दिन 4 अक्टूबर 1938 को प्रजामंडल कार्यकर्ताओं ने सत्याग्रह प्रारम्भ किया, क्रान्तिकारी रमेशचंद्र व्यास को पहला सत्याग्रही बनकर गिरफ्तार होने का श्रेय।

→ माणिक्यलाल वर्मा ने मेवाड़ का वर्तमान शासन नामक पुस्तिका छपवाकर वितरित एवं मेवाड़ प्रजामंडल : मेवाड़ियो से अपील" नामक पर्चे भी बांटे।

⇒ 24 जनवरी 1939 को माणिक्यलाल वर्मा की पत्नि नारायणी देवी, ज्येष्ठ पुत्री स्नेहलता, प्यारेचन्द्र विश्नोई की भगवती देवी को सरकार ने राज्य से निष्कासित कर दिया।

→ बेगार व बलेठ प्रथा के विरुद्ध अभियान चलाया जिस पर सरकार ने रोक लगाई, मेवाड़ प्रजामंडल की पहली विजय

by Aadarsh Rawat

→ 22 फरवरी 1941 को मेवाड़ प्रजामंडल पर से प्रतिबंध हटा एवं 25-26 नवम्बर 1941 को श्रीवर्मान जी की अध्यक्षता में पहला अधिवेशन आयोजित किया जिसका उद्घाटन आचार्य जे. बी. कृपलानी ने किया।

→ मेवाड़ प्रजामंडल ने "भारत छोड़ो आन्दोलन" (9 अगस्त 1942) में सक्रिय रूप से भाग लिया।
→ 20 अगस्त 1942 को प्रजामंडल कार्यसमिति ने मेवाड़ महाराणा को पत्र लिखकर आन्दोलन की चेतावनी दी
→ लेकिन मेवाड़ सरकार ने वापिस प्रजामंडल को गैर-कानूनी बना।

→ 8 मई 1946 को मेवाड़ सरकार ने ठाकुर सिंह की अध्यक्षता में संविधान निर्मात्री समिति का गठन किया जिसमें प्रजामंडल के पांच सदस्य शामिल किए। इसी समिति ने 29 सितम्बर 1946 को राज्य में उत्तरदायी शासन की स्थापना 50 सदस्यीय संविधान सभा का गठन का सुझाव दिया, परन्तु सरकार ने अस्वीकार माना

→ बाद में 23 मई 1947 को सलाहकार के एम. मुंशी द्वारा संवैधानिक सुधारों की नई योजना, 56 सदस्यीय विधानसभा के गठन का प्रावधान था।
→ इस प्रावधान के संशोधन हेतु मेवाड़ के दीवान एस.वी. रामामूर्ति ने मोहनसिंह मेहता का नियुक्त किया। जिसके बाद मेवाड़ प्रजामंडल ने विधानसभा चुनावों में भाग लेने का निश्चय किया।

→ 6 मई 1948 को उत्तरदायी सरकार के गठन की घोषणा
→ 18 अप्रैल 1948 को ही उदयपुर का राजस्थान में विलय

बांसवाड़ा प्रजामंडल आन्दोलन

→ बांसवाड़ा प्रजामंडल की स्थापना दिसम्बर 1945 में की गई (कक्षा 12 माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में 1943 अंकित है)
श्री मणिशंकर नागर अध्यक्ष तथा धूलजी भावसार मंत्री बनाए।
→ राजनैतिक जागृति देखकर महारावल पृथ्वीसिंह ने वैधानिक सुधार किए
→ धारासभा के चुनाव जिसमें 45 सीटों में से 35 सीटों पर प्रजामंडल के उम्मीदवार निर्वाचित हुए।
→ श्री यूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी के नेतृत्व में फरवरी 1948 में अंतरिम शासन

डूंगरपुर में प्रजामंडल आन्दोलन

→ डूंगरपुर प्रजामंडल : 26 जनवरी 1944 को श्री भोगीलाल पांड्या की अध्यक्षता में डूंगरपुर प्रजामंडल की स्थापना की गई, सदस्य → श्री गौरीशंकर उपाध्याय श्री हरिदेव जोशी, श्री शिवलाल कोटड़िया माणिक्यलाल वर्मा
→ सेवासंघ = भोगीलाल पांड्या के नेतृत्व में शिक्षा व समाजसुधार के क्षेत्र में असाधारण कार्य किया।

→ लोकप्रिय मंत्रिमंडल का निर्माण → श्री वीरभद्र सिंह के मुख्य नेतृत्व में 1 दिसम्बर 1947 को एक अंतरिम सरकार का गठन
→ जनवरी 1948 को गौरीशंकर उपाध्याय के नेतृत्व में लोकप्रिय मंत्रिमंडल का निर्माण किया गया।

महत्वपूर्ण तथ्य

→ डूंगरपुर में बागड़ सेवा मन्दिर की स्थापना -
श्री भोगीलाल पांड्या व श्री गौरीशंकर उपाध्याय ने की
→ सागवाड़ा में हरिजन आश्रम = बाबा लक्ष्मण दास व शोभालाल गुप्त
→ सागवाड़ा में खादलाई आश्रम = श्री माणिक्य लाल वर्मा
→ डूंगरपुर में सेवा संघ - श्री भोगीलाल पंड्या द्वारा स्थापना।
→ सेवाश्रम = श्री गौरीशंकर उपाध्याय द्वारा डूंगरपुर में
→ सेवक - गौरीशंकर उपाध्याय द्वारा निकाला गया हस्तलिखित समाचारपत्र
→ राजपूताना हरिजन सेवा संघ = रामनारायण चौधरी द्वारा स्थापित किया इसी उद्देश्य से अजमेर में नारेली आश्रम की स्थापना।

भरतपुर का प्रजामंडल आन्दोलन

⇒ भरतपुर महाराजा किशनसिंह (1900-28) उदार शासन
→ अंग्रेजो ने सारे प्रशासनिक अधिकार 1928 में मैकेंजी को सौंपे. मैकेंजी ने दमनकारी नीति, पुलिस अत्याचार शुरू।
→ विरोध में 1928 में भरतपुर राज्य प्रजा संघ की स्थापना।
→ प्रजासंघ के सचिव ठाकुर देशराज व अध्यक्ष गोपीलाल यादव व अन्य कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार।
→ 1937 में जवाहर लाल नेहरू की प्रेरणा से गोकुलचन्द वर्मा व गौरीशंकर मित्तल ने भरतपुर कांग्रेस मंडल की स्थापना की

भरतपुर प्रजामंडल का गठन - 4 मार्च 1938 को श्री किशनलाल जोशी के प्रयासों से भरतपुर प्रजामंडल स्थापना।
अध्यक्ष - गोपीलाल यादव, सचिव - किशनलाल जोशी।
उपाध्यक्ष - ठाकुर देशराज, एवं कोषाध्यक्ष - मास्टर आदित्येन्द्र
लेकिन सरकार ने इसे शीघ्र ही अवैध घोषित कर दिया।

→ जनता की मांगे, प्रजामंडल क्या चाहती है" आदि पुस्तके वितरण की गई, 1939 में डीग कस्बे में वीरेन्द्र सिंह गिरीश के नेतृत्व में प्रजामंडल आन्दोलन प्रारम्भ।
→ 21 सितम्बर, 1939 को महिलाओं के जुलूस का नेतृत्व कर रही मा० आदित्येन्द्र की पत्नि राजेश्वरी देवी (पुत्री काका) एवं धर्मवती देवी को गिरफ्तार कर लिया गया।

→ महाराजा बृजेन्द्र सिंह के समय सरकार व प्रजामंडल के बीच 23 दिसम्बर 1939 को समझौता हुआ।
इसके अनुसार प्रजामंडल का नाम भरतपुर राज्य प्रजा परिषद -
→ मास्टर आदित्येन्द्र प्रजा परिषद के अध्यक्ष बने।
→ राजनीतिक बन्दीयों को अगस्त 1940 में तीज दरबार के अवसर पर रिहा कर दिया गया।
→ 1939 के अन्त में फकीरचन्द कपूर ने सरकार समर्थक संस्था "जमींदार किसान सभा" गठित की।

⇒ 1 जनवरी 1940 से भरतपुर राज्य प्रजा परिषद ने कार्य आरम्भ किया पहला सम्मेलन - 30 दिसम्बर - 1 जनवरी 1941 इसकी अध्यक्षता जयनारायण व्यास ने की।

⇒ प्रजा परिषद को रोकने हेतु उच्च कर्मचारियो ने प्रजा सहायक सभा एवं अंजुमन रिया सभा का गठन।

→ 1942 में भरतपुर राज्य प्रजा परिषद के आन्दोलन को अवैधानिक घोषित कर दिया गया था।

⇒ भारत छोड़ो आन्दोलन के समय भरतपुर में भूख हड़ताल रखी गई, महिलाओ का नेतृत्व श्रीमती सरस्वती बोहरा करती

→ ब्रजजया प्रतिनिधि समिति नामक जन व्यवस्थापिका का गठन

→ 10 मार्च 1943 भरतपुर सरकार ने चुनाव प्रस्तावित की

→ मार्च 1943 में चुनाव हुए, प्रजापरिषद को 23, जमींदार किसान सभा को 14 स्थान प्राप्त हुए।

→ भरतपुर में मई 1946 को मंत्रिमंडल चुनावो की घोषणा। लेकिन 26 अगस्त 1946 को बहिष्कार का निर्णय।

→ प्रजापरिषद ने 17-18 दिसम्बर 1946 को कामां में तृतीय अधिवेशन का आयोजन किया।

→ दिसम्बर 1947 को प्रजा परिषद के मास्टर आदित्येन्द्र गोपीलाल यादव, हरिदत्त शर्मा, जमींदार किसान सभा ठाकुर देशराज को मंत्रिमंडल में शामिल किया गया।

तीन माह बाद 18 मार्च 1948 को मत्स्य संघ में विलय

youtube- Rajasthan classes

मारवाड़ प्रजामंडल

→ सर्वप्रथम 1915 में मरुधर मित्र हितकारिणी सभा नाम राजनीतिक संगठन की स्थापना।
→ 1918 में चान्दमल सुराणा ने मारवाड़ हितकारिणी सभा।
→ 1920 में जयनारायण व्यास ने मारवाड़ सेवा संघ की स्थापना इसके अध्यक्ष दुर्गाशंकर और मंत्री प्रयागराज भंडारी

→ मारवाड़ सेवा संघ का निसंद हो जाने से पुरानी संस्था मारवाड़ हितकारिणी सभा का पुनर्गठन। (1921 में पुनर्गठन) लेकिन मा॰शि॰बो॰ में 1923 दे रखा है।

→ मारवाड़ का तोल आन्दोलन - 1921 में जोधपुर
- सरकार ने यहां अस्सी तोले की सेर चालू रखा।
- चान्दमल सुराणा (मारवाड़ सेवा संघ) ने आन्दोलन छेड़।
→ सरकार को झुकना पड़ा. पुनः सौ सेर कायम किए।
→ जोधपुर सरकार ने 1922 ई. में मारवाड़ प्रेस एक्ट लागू।

→ मारवाड़ राज्य लोक परिषद् = 1929 में जयनारायण व्यास द्वारा स्थापना, (अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद) की इकाई (जोधपुर में)
→ इसका प्रथम अधिवेशन जोधपुर में 11-12 अक्टूबर 1929।
→ को रखने का निर्णय, लेकिन जोधपुर सरकार ने प्रतिबंध।
→ जयनारायण व्यास ने पोपाबाई रो राज, मारवाड़ की अवस्था नाम पुस्तिकाएं प्रकाशित की।

→ जोधपुर सरकार ने तरुण राजस्थान का मारवाड़ में प्रवेश पर प्रतिबंध, साथ ही 23 सितम्बर 1929 को जयनारायण व्यास व आनंदराज सुराणा को गिरफ्तार। दौलतपुरा (डीडवाना) में व्यास को एवं गिराब (जोधपुर रोड़) के किले में आनन्दराज सुराणा को नजरअन्दाज किया गया।
→ 14 अक्टूबर 1929 को भंवरलाल सर्राफ को भी गिरफ्तार।
→ 21 जनवरी 1930 को तीनों को केन्द्रीय कारावास जोधपुर भेजा।

By Adarsh Kumawat

⇒ गान्धी इरविन समझौते के बाद इन्हे रिहाई दी गई
⇒ मारवाड़ यूथ लीग व बाल भारत सभा। 10 मई 1931 को जोधपुर में जयनारायण व्यास के निवास पर मारवाड़ यूथ लीग की स्थापना की गई।
इसके प्रथम अध्यक्ष भीमराज पुरोहित, मंत्री - मानमल जैन।

⇒ मारवाड़ राज्य लोकपरिषद का प्रथम अधिवेशन -
24-25 नवम्बर, 1931 को पुष्कर में श्री चांदकरण शारदा की अध्यक्षता में, श्रीमती कस्तूरबा गांधी, कालेलकर भी शामिल हुए।

⇒ जोधपुर प्रजामंडल की स्थापना ⇐
⇒ भंवरलाल सर्राफ की अध्यक्षता में जोधपुर प्रजामंडल (मारवाड़ प्रजामंडल) की स्थापना 1934 ई. मे की।
रणछोड़ दास गट्टानी एवं पुरुषोतम मैयर भी साथ थे।
→ रणछोड़ दास ने 2 जून 1936 को जोधपुर सिविल लिबर्टीज यूनियन गठन

→ 5 जून, 1937 को मारवाड़ प्रजामंडल को अवैधानिक घोषित।
→ 23 जनवरी 1938 को सुभाषचंद्र बोस जनसभा हेतु जोधपुर आए
→ 16 मई, 1938 को मारवाड़ लोक परिषद की स्थापना जिसमें रणछोड़दास गट्टानी अध्यक्ष, सचिव अभयमल जैन

→ लोक परिषद के विरोध में वकील गणेशदास बोहरा ने श्री राजभक्त देश हितकारिणी सभा की स्थापना की।
→ 28 मार्च 1940 को मारवाड़ लोक परिषद व उसकी सब शाखाओं को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया।

→ मारवाड़ लोक परिषद का जन आन्दोलन ←
⇒ लोक परिषद के अध्यक्ष रणछोड़दास गट्टानी ने इस आंदोलन का नेतृत्व मथुरादास माथुर को दिया।
⇒ 26 जून 1940 को राज्य व मारवाड़ लोक परिषद के मध्य समझौता, लोकपरिषद ने आन्दोलन वापिस ले लिया।

By Kadarsh Kumawat

⇒ लोक परिषद का प्रथम राजनीतिक सम्मेलन जोधपुर में हुआ, जयनारायण व्यास को अध्यक्ष चुना। ये सम्मेलन 23 जून 1940 को हुआ।
→ वर्ष 1941 के लिए श्री मथुरादास माथुर को सर्वसम्मति से लोक परिषद का अध्यक्ष बनाया।
→ 28 मार्च 1941 को प्रथम उत्तरदायी शासन दिवस मनाया।

⇒ जोधपुर नगरपालिका के प्रथम चुनाव 7-8 जून 1941 को। जोधपुर नगरपालिका के प्रथम अध्यक्ष व्यास चुने गए।
⇒ मारवाड़ लोक परिषद ने 11 मई 1942 को दूसरा सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ करने का निश्चय किया।
→ इसके अधिनायक जयनारायण व्यास को बनाए।
→ 26 मई 1942 को व्यासजी को गिरफ्तार कर लिया।

⇒

youtube- Rajasthan Classes

By Aadarsh Kumawat

वर्ष क्रमानुसार

1	जयपुर प्रजामंडल -	1931	कर्पूरचन्द पाटनी
2.	बून्दी प्रजामंडल -	1931	कांतिलाल
3.	मारवाड़ प्रजामंडल -	1934	भंवरलाल सर्राफ
4.	कोटा राज्य प्रजामंडल -	1934 -	प० नयनूराम शर्मा
5.	बीकानेर प्रजामंडल -	1936	मघाराम वैद्य
6.	मेवाड़ प्रजामंडल -	1938	बलवंतसिंह मेहता
7.	मारवाड़ लोक परिषद -	1938	रणछोड़दास गट्टानी
8.	भरतपुर प्रजामंडल -	1938	गोपीलाल यादव
9.	करौली प्रजामंडल	1938	त्रिलोकचन्द माथुर
10.	शाहपुरा प्रजामंडल -	1938	अमयसिंह डांगी
11.	अलवर राज्य प्रजामंडल -	1938	प० हरिनारायण शर्मा
12.	सिरोही प्रजामंडल -	1939	श्री गोकुलभाई भट्ट
13	जैसलमेर राज्य प्रजा परिषद -	1939	श्री शिवशंकर गोपा
14.	किशनगढ़ प्रजामंडल -	1939	श्री कांतिलाल चौधानी
15	कुशलगढ़ प्रजामंडल	1942	श्री भंवरलाल निगम
16.	बीकानेर राज्य परिषद	1942	बाबू रघुवर दयाल गोयल
17	बून्दी राज्य लोकपरिषद -	1944	श्री हरिमोहन माथुर
18.	डूंगरपुर प्रजामंडल	1944	श्री भोगीलाल पांड्या
19.	प्रतापगढ़ प्रजामंडल	1945	श्री चुन्नीलाल
20.	बांसवाड़ा प्रजामंडल	1945	
21.	झालावाड़ प्रजामंडल	1946	श्री मांगीलाल भव्य
22.	जैसलमेर राज्य प्रजामंडल	1945	श्री मीठालाल व्यास
23.	धौलपुर प्रजामंडल -	1936	कृष्णदत्त पालीवाल।

By Aadarsh Kumawat

→ प्रजामंडल :-

→ मारवाड़ प्रजामंडल → भंवरलाल सर्राफ की अध्यक्षता में 1934 में, रणछोड़दास गट्टानी, पुरुषोत्तम मेयर भी साथ थे
→ 5 जून 1937 को प्रजामंडल को अवैधानिक घोषित किया।
→ रणछोड़दास गट्टानी ने 2 जून 1936 को जोधपुर सिविल लिबर्टीज यूनियन का गठन किया।
→ इससे पहले =
सर्वप्रथम 1915 में मरुधर मित्र हितकारिणी सभा की स्थापना की गई।
→ चान्दमल सुराणा ने 1918 में मारवाड़ हितकारिणी सभा की।
→ 1920 में जयनारायण व्यास ने मारवाड़ सेवा संघ की स्थापना
→ 1921 (मा०शि. 1923) को मारवाड़ हितकारिणी सभा का पुनर्गठन
→ राजभक्त देश हितकारिणी सभा का गठन - हितकारिणी सभा को दबाने के लिए सुखदेव प्रसाद इसका गठन किया।

→ मारवाड़ युथ लीग व बाल भारत सभा = 10 मई 1931 को जोधपुर में जयनारायण व्यास के निवास स्थान पर मारवाड़ युथ लीग की स्थापना, अध्यक्ष : भीमराज पुरोहित।

मारवाड़ प्रजामंडल गठन के बाद =
→ मारवाड़ लोक परिषद की स्थापना = 16 मई 1938
रणछोड़दास गट्टानी को अध्यक्ष, सचिव - अभयमल जैन
→ मारवाड़ लोक परिषद का प्रथम राजनीतिक सम्मेलन जोधपुर में हुआ, जिसके अध्यक्ष - जयनारायण व्यास चुने
→ मारवाड़ लोक परिषद का वार्षिक अधिवेशन 8 फरवरी 1942 को लोहनू में आयोजित हुआ, अध्यक्ष - रणछोड़दास गट्टानी

→ भूख हड़ताल - भूख हड़ताल 11 जून 1942 को शुरू बाल मुकुन्द गर्मी और पुलिस मार को नहीं झेल पाए 19 जून 1942 को उनकी विडम अस्पताल में मृत्यु।
→ 26 जुलाई 1942 को समूचे राजपुताना में मारवाड़ सत्याग्रह दिवस मनाया गया।

→ लालचन्द ने नवयुवकों को संगठित करने हेतु मारवाड़ क्रान्ति संघ की स्थापना की।
→ महिलाओं का योगदान - 17 जुलाई 1942 को महिलाओं ने सत्याग्रही जत्थे का नेतृत्व किया महिमा देवी किंकर के नेतृत्व में केसरिया साड़ी में एकत्र।

→ जयपुर प्रजामंडल
→ 1931 ई. में श्री कपूरचन्द पाटनी एवं श्री जमनालाल बजाज के प्रयासों से गठन।
→ जयपुर राज्य पुनर्गठन - 1936 ई. में जयपुर के चिरंजीलाल मिश्र को अध्यक्ष हीरालाल शास्त्री जी को महासचिव बनाया गया।
→ सन् 1938 में जमनालाल बजाज को अध्यक्ष बनाए।
→ जयपुर में बजाज की अध्यक्षता में 8-9 मई 1938 को प्रजामंडल का प्रथम अधिवेशन
→ शेखावाटी किसान सभा का विलय भी प्रजामंडल में।

→ महिलाओं ने रतनदेवी शास्त्री (हीरालाल की पत्नि) के नेतृत्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
→ 5 मार्च 1939 को गिरफ्तारी रतनदेवी व कार्यकर्ताओं की
→ श्री दुर्गावती देवी शेखावाटी के महिला जत्थे ने 18 मार्च 1939 को गिरफ्तारी दी।

→ 12 मार्च 1939 को जयपुर दिवस मनाया गया।
→ जेन्टलमेंस एग्रीमेंट - तत्कालीन प्रजामंडल अध्यक्ष हीरालाल शास्त्री एवं रियासत प्रधानमंत्री सर मिर्जा इस्माइल के मध्य 1942 में समझौता
→ आजाद मोर्चे ने भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया।
→ जयपुर प्रजामंडल के अध्यक्ष देवीशंकर तिवाड़ी के समय जयपुर राज्य राजस्थान का पहला राज्य बना जिसने अपने मंत्रिमंडल में गैर सरकारी सदस्य नियुक्त किया।

→ बीकानेर प्रजामंडल ← पंडित मघाराम वैद्य की अध्यक्षता में 4 अक्टूबर 1936 को गठन।
लक्ष्मीदास स्वामी को मंत्री, भिक्षालाल बोहरा - कोषाध्यक्ष
→ बीकानेर सेफ्टी एक्ट 1932 के तहत ये कार्यकर्ता राज्य से निष्कासित कर दिए। कार्यकर्ता नेहरू से मिले।
→ कलकत्ता में बीकानेर प्रजामंडल की स्थापना - 1937 में अध्यक्ष लक्ष्मीदेवी आचार्य को बनाया
पुस्तिका बीकानेर की थोथी-पोथी नामक छपवाई।

→ बीकानेर राज्य प्रजा परिषद की स्थापना - 22 जुलाई 1949 बाबू रघुवर दयाल गोयल की अध्यक्षता में
→ 26 जनवरी 1945 को मघाराम वैद्य को अध्यक्ष बनाया।
→ 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ बीकानेर में प्रजा परिषद ने ईदगाह बस्ती के बाहर तिरंगा लहराया।

⇒ कोटा राज्य प्रजामंडल ⇐
→ हाड़ौती प्रजामंडल के नाम से 1934 में पं. नयनूराम शर्मा एवं प्रभुलाल विजय द्वारा स्थापित।
→ 1938 में पं. नयनूराम शर्मा, अभिन्न हरि एवं तनसुखलाल मित्तल के प्रयत्नों से पुनः स्थापित

- बून्दी प्रजामंडल - 1931 में श्री कांतिलाल द्वारा स्थापित
⇒ बून्दी राज्य लोकपरिषद - 19 जुलाई 1944 को
⇒ अध्यक्ष श्री हरिमोहन माथुर व बृजसुन्दर शर्मा - मंत्री

⇒ झालावाड़ प्रजामंडल - 25 नवम्बर 1946 को
अध्यक्ष - श्री मांगीलाल भण्ड, कन्हैयालाल मित्तल - उपाध्यक्ष

→ सिरोही प्रजामंडल - 22 जनवरी 1939 को सिरोही में श्री गोकुल भाई भट्ट अध्यक्ष, साथी कार्यकर्ता - श्री धर्मचन्द सुराणा, दीपालाल चौधरी, रामेश्वर अग्रवाल, पुनमचन्द।

By Aadarsh Kumawat

→ इससे पूर्व बम्बई में 16 अप्रैल, 1935 को प्रवासी सिरोही प्रजामंडल की स्थापना की गई। नेतृत्व गोकुल भाई भट्ट को सौंपा गया था।

⇒ करौली प्रजामंडल – 1938 में श्री त्रिलोकचन्द माथुर चिरंजीलाल शर्मा, कुंवर मदनसिंह द्वारा गठित।

⇒ शाहपुरा प्रजामंडल - 18 अप्रैल 1938 को अभयसिंह डांगी बने अध्यक्ष, माणिक्यलाल का सहयोग।

⇒ धौलपुर प्रजामंडल - 1936 में कृष्णदत्त पालीवाल द्वारा।

⇒ अलवर राज्य प्रजामंडल - 1938 में हरिनारायण शर्मा एवं कुंजबिहारी मोदी द्वारा गठित।

⇒ जैसलमेर राज्य प्रजामंडल - 15 दिसम्बर 1945 को मीणालाल व्यास द्वारा जोधपुर में स्थापित।
· विरुद्ध में सामंती लोगों ने जैसलमेर राज्य लोकपरिषद का गठन 1939 में शिवशंकर गोपा द्वारा गठित - जैसलमेर राज्य प्रजा परिषद

⇒ डूंगरपुर प्रजामंडल – 26 जनवरी, 1945 को भोगीलाल पांड्या, हरिदेव जोशी, शिवलाल कोटड़िया

⇒ बांसवाड़ा प्रजामंडल – भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी, धूलजीभाई भावसार द्वारा दिसम्बर 1945 में (मा. शि. 1943)

⇒ प्रतापगढ़ प्रजामंडल 1945 ई. को (मा. शि. 1936) श्री चुन्नीलाल एवं अमृतलाल के प्रयासों से

⇒ किशनगढ़ प्रजामंडल - 1939 में कांतिलाल चौथानी।

⇒ कुशलगढ़ प्रजामंडल - अप्रैल 1942, भंवरलाल निगम (अध्यक्ष) बने, साथी कन्हैयालाल सेठिया।

RAJASTHAN CLASSES

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

By Aadarsh kumawat

Pdf को अपने मित्रो के साथ शेयर जरुर करें